

DPN 5797

Title: स्वरोदये ग्रहभक्ति SVARODAYE GRAHA BHAKTI

Run. No. 6488

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Astrology ज्योतिष*

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / *Hindi mixed*

Size in cms. 42.5 x 6.3

Folios 9 Lines (in a page) 14
Extant folios 8, 21, 26,
Chapt. / act /

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor धन देवज्ञ

Date: NS / SS / VS / KS 865

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon: → इति नृपति जय चर्याया ग्रहयामलेय ग्रहभक्तिः समाप्तमिति शुभमस्तु ॥ ॥

[illegible]

धर्मदक्षिणदावर्षे॥ दक्षिणानुनवर्षेनस्याकिंविच्छेदागुरुमा॥८३॥ संन्यवर्षादिमा॥ यस्यानविद्धं वर्धादियं च कम। हलं विंशत्यपकापंचकवयवदुवा दगः॥ ८४॥ अवधव
 धाधिकयावत्सु नवधययावती॥ दक्षिणदनुमाननेवाद्याविंशत्यपकावर्षे॥८५॥ अवविंशतिकायसंरुवंतिसेगगुरुं। अन्यान्येभ्यः पुरुषाणां यद्गुरुगुरुम्
 ॥८६॥ वर्तमानोर्ध्वदिशां गकल्पनात्पूर्वकमात्। वर्तमानार्धविह्यापडह्यानुवगुरुगुरुमा॥८७॥ दशध्वं गयजायीजनृपतियवधसुथा। यमुदक्षिमुत्तम्याइहिदं मउ
 लक्ष्यं॥८८॥ अकावतुदलं पृथं दक्षाभां यजेजायते। स्वजातिमां गतुकिंश्च इह हिं कं नु नो नव॥८९॥ यनवकाममस्तु इह हिं च सवाजकोऽमनो विपर्ययं नु इह हिं
 मउलं वन॥९०॥ अ ३ ७ ९ ८ १ ८ २ अ
 यतिसर्वे नाराथे २ ३ अ व क ह ज उ १०
 गतयदं वदुदक्षां १ ला ४ २ ३ ७ म ११
 दृकानां तु गतमकं २० व १ ३ अ ३ ९ ८ १२
 नसमायागदकेकं २६ द १२ वि पू श ८ य १३
 सुरुदुस्तुआमय २९ स ११ अ ज अं १ न १४
 ८कं तु सुरुवां सन २३ म उ १० न ८ ४ का १९
 दृष्ट्या कुनदीमा २३ अ वा ३ ह य न म २४
 गुरुलं गतनिर्वध २० २२ ० २१ २० १२ १८ ११ २०
 नादयं गतयदवकुम् ॥ अशाविंशतितीर्थमा। अंशवकुं रुवत्वावयइकं वेदयामला॥ १॥ दक्षिणदीनिहो न्ययादा दनकमव। साहिजिहि

[illegible]

नामध गतायदि। यद्वं पा कानखंति यत्पुनरुं गनविशत॥ ११॥ सोम्यावाकृतथा काटमश्च कनयदाह्मिना। सयंदर्जसमर्थनिवसकसागजधिया॥ १२॥ वाक्
 सनरग॥ १३॥ कृत्वा पाकनिर्वाह नयदा॥ त्रिपुत्रयं द्रव्यं निविना यद्वननिश्चितम्॥ १४॥ या कानस्त्वग दा॥ कृत्वा वदिर्मर्मासुहाह्मिना। समयद्वं रुवतु खंति यानादि
 नदिन॥ १५॥ सोम्या कृत्वा तथा याक्षो या कानमश्वाकृत। उक्तस्य यत्कृत्वा किं संप्रमं तदुदावृत्तं॥ १६॥ गजास्त्रयथरुयाले॥ सोमं तमंडलं खना॥ तज्जट्टमहावीरं
 नयानुरयावपि॥ १७॥ वाक् कृत्वा गदाया। सोख रुहं मदाद्रुट्ट॥ १८॥ द्वादिनायुषे॥ सर्वनाहवंतु दान् दं रुवत॥ १९॥ वादिनायकवादिन॥ २०॥ स्त्रवायुतसंकुला
 । वधमृक्कलिफांग। अंमालावगुतिता॥ २१॥ गृध्रकोकसिवास्त्रिभं किनीयुतवाक्का। वितालाकतदुका नानुनृत्वांति दान्दी॥ २२॥ द्वां च महाघानं यद्वं त
 रुवकुवां नेकधिदिजयी यद्वं दयायातियमालयम्॥ २३॥ समसंघासुहा कृत्वा वदिर्मर्मासुहाह्मिना। तदा संधिविजानीयात्सेनया नुरयावपि॥ २४॥ कृत्वा रं गजय॥ सो
 म्मि। मि। मि। गुरुत्वं महां। विचार्य कृत्वा यद्वं काटवके स्त्रवाद्ययी॥ २५॥ यवधधिष्ठा। गवन्दुजीवपद्वं संहि। निधी। थके विवर्धे। र्ज कर्तुं वां वाक्का। सो न्यके॥ २६॥
 ॥ निर्गमसुहाह्मि। तवेदुत्तास्य कनगेनृप॥ कर्तुं कवियेद्वं वनासुफवहिरुन॥ २७॥ यवधनिर्गमोयुकी। सो न्यया नुरयावपि। कवो कटउत्तयसुविपनीयवाज
 य॥ २८॥ कृत्वा वदुयवधे। पुनमश्मि। तायदि। तदा काटविनासाये काटसुवाक्का रूपत॥ २९॥ यवधवाक्कावक कनसुसेनविग्रह॥ इहं द्वां मृत्पुनं गोववदि॥
 सेनस्य जायते॥ ३०॥ निर्गमसुहाह्मि। वदुयवधे। कृत्वा वकुं कवातिवत। या कानस्य रुवद्वं गं या कानस्य पुनस्य च॥ ३१॥ पुनरुनिगमवका कथं वि। कृत्वा वदना॥ इग्नं मृका
 दा काले इग्नं रु॥ पुपलायत॥ ३२॥ यथा कृत्वा॥ रुथा सोमो॥ रुलेयश्च विषययत। मि। मि। मि। विजानीयात्काटव कुनसंघय॥ ३३॥ इग्नं सेनं तथा उच्चपा कानमे
 हागगांनी वसुधवर्कसेनं स्यात्तव्यं सवधिरि॥ ३४॥ काटं काटाधिपनीचो निघ्नो लोमहाकृत्वा। समसुवेयुवद्वं तिउच्चसुनि॥ रुलो। तुतो॥ ३५॥ या कानवसुका ध्रु
 नि॥ उच्चसुनादुसुजा। या कानसुवेदि॥ सेनानी वसु। गोवनि॥ रुलो॥ ३६॥ समदृष्टीयुवद्वं दायस्य नो सर्वदसदा। नीयकसुनवधुको रुलं दो नानुसंघय॥ ३७॥
 उच्चदृष्टा गदकृत्वा तदि कृत्वा लीयं उक्तहनी समेवसाधयेत्तवडी वधुपातनराम्खे॥ ३८॥ इग्नं मधगतसूर्यजलं। सोमं यजायेतावदुहं ग कृत्वा दाहावधवृद्धिवलानवा॥

२१

15

10

5

कालापूर्वीरुमीपृष्ठदक्षिणगगुहा॥१॥ कालापूर्विरुमी॥ ॥बृद्धजलाग्निमोमयेनेमखन् लयमा॥१॥व्यावकसोमयेनेमखन् लयमा॥१॥कवी
 नामहारुमीपाकायवक्रयामलापृष्ठदक्षिणगगुहा॥१३॥कवीनारुमी॥ ॥वेणुदियूर्वतावामंजम॥काष्टावदुष्टय।मिनिद्रायामरु
 रुमिजयदापृष्ठदक्षि॥१३॥मिलिक्करुमी॥ ॥विलामपूर्वतामासावेणुयादिकुष्टय।प्रहनासवामार्जनमोसस्तुनदिगच्छत॥१२॥वाहुवंगकवीकाटजय
 दापृष्ठदक्षि॥१३॥कृपासीमहारुमीरुवलांनावला॥१४॥यद्वलाद्वलयूकानिरुवलानापनामिवा।॥तद्वलननदितावलान्धारुवा

मृथदूतगुनिजानिकहो॥ ॥उत्थतिवसिकुनागर्नाचून०उत्थतिकानद्वरुदधिकारुडउडन०वंडहा००रुलकरुन०गर्हकानद्वरुहातमयनराजनधन
 काकुनागर्ना०ताहिवाहनकानद्वरुहातमयवहाववमुदिकाकुनामना०ताहिवाविकानद्वरुहात०पुनश्चुमीलंकानकिद्वगटा००काकुनारुना०ताहिवा
 रुनकानद्वरुहातटकुनावावकाकुनारुना०पुवसिवाचनद्वरुहातदानपुधुमीर्थकाकुनारुना०ताहोवाहनकानद्वरुहातमोमोसखद्वरुकाकुलामंदाका
 कुनारुना०नावकोउरुलकागगुकाकुनारुना॥ ॥००तिद्वरुगुतियुष्टविद्या॥ ॥
 श्रीवृद्धयामललीषंत॥आनाजाकाटकंमृथगेद॥तस्मात्तायसुलोतिलेगनुदिन॥काट
 कावाहकाश्रीनद्वरुजाचूनगनुकाकुलयसागविहनु॥तनुश्री०नद्वरुटर्कगया
 सेन्यामाविजा॥श्रीवृद्धितियासुनेरवहिरितवका॥श्री०नेद्वरुजद्वरुगवियतगिदि
 नहा॥सेन्या॥थकिमाविजा॥मितीयस्तान॥श्रुतनाविकाश्री०नद्वरुजागगना॥
 सा००वनश्रावन्॥पादुपनिश्रावन्॥वेउथस्त॥गर्हकावाविनद्वरु॥आगगनाव

नाम	रु	को	नविहमिहगु०मीमागु०००वि०गमी
त्रय	कद्व	वउ	तमहावर्गमश्रुकवगदोगहा००यावि
लोप	उ	द्व	वद्वले॥ ॥००तिद्वरुवाविवान॥
			यरु००त्यातहा॥॥रुनावाजवा
			नि॥मन०वाकि०मिद्रांहा॥श्री

सध्याता
 काट नाट
 वृद्धनाट

15
 10
 5

०५ दर्क जा ॐ निग्रयं सिद्धिदा ॥ जा ना जानि का ला व क न यु ४ त स ना जा क ने मा म का वा न न द ग जा ग ना व नि म न वां वि त सि धि दा ॥ ॥ अर्क वि वा
 व य सा ग न ४ वा द न क आ ठ न द न का ल ना वि दा ॥ ता हि रि व का आ ष न द न सा ध ना वि दा ॥ अ नि ता हि रि त न का आ ष न द न अ न ना वि दा ॥ रि त न का वा न न द न र ४ का
 जा न ॥ सा नू ड ना वि दा ॥ जा ना जा द र्क को ट व न जा त स्को ट का ना म न द न ४ दि ष का ट व क था य न ॥ जा वा न न द न रि त का र्क न ॥ त न न द न ना जा जा ग ना व नि
 ॥ म न वो द्धि त सि धि दा ॥ अर्क वि वा न य सा द र्क ॥ ग र्क का आ दि त द न ४ का ट का या नि द ट ॥ अर्क वि वा न य सा द र्क ॥ ॥ ग र्क ४ ग र्क रि त न द न ॥ पा य ग र्क वा द न द न ना सा का ०
 जा ला र्क न नि ग्र यं ॥ जा व र्क का पा य ग र्क ४ रि त न का ग र्क ४ द न ४ त स का ट ड य न ॥ द च लि आ व र्क स के न ॥ वं द स र्क य व द्धि का मि ॥ स या य न द्धि का ॥ व को ॥ सि ध व क
 य न ॥ क र्क न द न मू दा द न ॥ क र्क ४ क र्क ट य जा ना वं ड य मू दा द न ॥ वं ड य ग ता स र्क ४ वं ड न के व सं स्मि त ४ जा ॐ ना जा ॐ र्क ४ स र्क ४ स र्क ४ व सं स्मि त ॥ ॥ ॐ
 ना वि द्धि यं त स ॥ ना दि ट डि द्धि त ॥ नू ड जा म ल रा धि तं द न अ क ग ता सि धि ॥ ॥ अ नू ध वा द ट ग ता ॥ म ध ग ता ग व धू र्क ४ ॥ वा द न य नी य त र्क यं ॥ अर्क वि वा न
 य सा द र्क ॥ वं ड मा नू ड ना डि दा त का ट हो र्क र्क य ॥ मं ग ल हा त आ ग ला ग ॥ वृ ध हा ना जा मं लि ० क ना वा न ॥ वृ धि वं त ॥ वृ ह स्य ती हा त ४ अं न या नि रु ज न र्क य
 हा ॥ पु क हा त वं व ल वि रु ना जा को हा ॥ कि को ट द्धि अ र्क न ॥ अ स का ट का ग र्क रि त न स न स न हा त स्का ट का नि का आ यि म न ॥ नि का र्क गो म न ॥ ना ग ला ग ॥ अ स्का ट का
 ग र्क रि त न ना द्धि क र्क न ॥ त स्का ट का ष क न का ॐ वि स द ॥ ॥ र्क ॥ कि स र्क ना ग ला ग ॥ का ट का र्क वा न न द न मा म न व य र्क न मा नू का ॐ र्क ॥ अर्क वि वा न य सा द
 र्क ॥ अ व स र्क य र्क ॥ सा न द न ४ त स्का ट स रि द्धि सं ता घ ॥ अ व स र्क य र्क पूर्व दि सा द न क ना जा क ना ग ला ग ला र्क न ॥ अ कि र्क ला ग ॥ ना जा का य वि वा न स ष न पा व ॥ ॥
 य व स र्क य र्क आ ग य दि सा द न त स्का ट आ ग ला र्क ॥ अ व स र्क य र्क द दि न हा त ॥ ना जा ना नि ना ग ला ग ॥ ॥ अ र्क के या ॥ वा नि रु ता मा नू य के कि या ४ मे व ने हा ॥ ॥ द न
 अ नि का ल हा ॥ य व कि ना जा आ व ॥ का ट र्क ॥ अ व स र्क य र्क ने वि ल द न ॥ त स्का ट द न ४ अ ग व न ॥ ॥ का ट द्धि य न ॥ अ व स र्क य र्क य दि सा द न क ॥ त मा जा कि जा सा
 द न ॥ अ व स र्क य र्क वा य य दि सा द न ॥ ना जा का ट द्धि ग व जा नू य न लो र्क ॥ य व कि ना जा कि र्क य हा लि र्क ॥ अ व स र्क य र्क ४ उ र्क न दि सा द न ॥ सा ना जा अ र्क र्क

15
10
5
0

अथातः संप्रवक्ष्यामि चतुःषष्टिबलं महत्तमं येन पुत्रनमात्रेण संप्रामेयिजयो भवति ॥ १॥ पीठाष्टापीठनाथाष्टपीठदेव्याष्टभैरवंः संश्लेषत्रयपालाष्टदिशापालाष्टदुतिका
 ॥ २॥ वटुकाकस्येते चाष्टौ योगिनी चाष्टमष्टकं सप्तदशाष्टकं चैव सप्तदशदधिकं सतां ॥ ३॥ प्रणवादिनमोक्तस्यानामोच्चोरेण प्रनेयतः कामरूपरजं चैव पीठाष्टकमिदं भ
 वेत् ॥ ४॥ यथापीठास्तथानाथापीठदेव्यास्तथैव च। पूर्वसंकेतकविद्धि भैरवाष्टमतः शृणु ॥ ५॥ आसितोगोत्रुशुं डकोधो न्तोतथैव च। कपोलीभीषणश्चैव भैरवाष्टमतस्तत् ॥ ६॥ ब्राह्मी
 माहेश्वरीश्चैव कौमारी वैष्णवीस्तथा। वाराही चतुश्चाणी चामुंडा चाष्टचंडिकाः ॥ ७॥ संपाष्टकं सविद्या नंक्षेत्रपालाष्टकं शृणुः। वज्रहस्ततथाधुं मुकालदंडो निशाचर ॥ ८॥ मेघनादोः
 धनो य सोऽं कश्चेति तु चाष्टमष्टाक्षेत्रपालाष्टकं विद्धि दिशापालाष्टकं कथ्यते ॥ ९॥ इन्द्रमणिमयं चैव नैऋतं वारुणं तथा। वायुसौम्यं तथा न्यं द्वितीयाष्टमतः शृणुः ॥ १०॥ वज्रतुंडा तथा ज्वा
 लायमदंडाचराहसौ। जलजा चंचलाश्चैव सौमित्रौ चंद्रसेवना ॥ ११॥ वटुकाकस्येते चाष्टौ उक्ता वै योगिनीमते। कुमानहकापिलहं कपोवह्म चानौ शिशुर्गणाः ॥ १२॥ चर्चटो जटो लश्चै
 व दिग्भागा गणा देवता। चतुःषष्टि सुयोगिन्यो कथ्यते चाव्ययभ्रमं ॥ १३॥ ब्रह्मा च सुपुलिदी च श्रीयं वासो मयं गला। अभिनंदा सुनंदा च वागेशी प्रथमाष्टकं ॥ १४॥ माहेश्वरी तथा रो
 शोऽस्वरी च जटो धनी। नीलाकपिलनेत्रा च संवनी द्वितीयाष्टकम् ॥ १५॥ माहेश्वरी तथा ॥ १५॥ कुमारी कोसला कौला कुलनंदा कुलोत्तरा। काली कपालिनी नम्रा त्रितीयाष्टमिदं
 भवेत् ॥ १६॥ वेषुना च कुगा च कालरात्री कपालिका। कृष्णा चापिंगला पिंडा कलजिह्वाष्टकं चतुः ॥ १७॥ वाराही घोररूपा च चर्चरी न सलं पटाष्ट। तीक्ष्णा दंडा च कुञ्जा च डा
 नंदा पंचमाष्टकम् ॥ १८॥ ऐश्वरी चक्रा च मोहा च तडि जिह्वा नरानना। मातंगी ज्वाला मुखी युक्ता षष्ठाष्टकं मिदं भवेत् ॥ १९॥ चामुण्डा च महाकाली कालिका रुधिरण्या।
 पिशाचाः ज्वाला मुखी ग्रामातरा सप्तमाष्टकम् ॥ २०॥ चण्डिका च महालक्ष्मी महामाया महाबला। सीतला च तथा सौम्या भीमा भीषाणि चाष्टमम् ॥ २१॥ सप्तदशाष्टकं चैव रागा
 त्रादिपुत्रयेत्। मद्यमोक्षफलं पुष्पं गंधधूपं तथैव च ॥ २२॥ वस्त्रपारंशुवर्णं च वित्तशब्दं नकारयेत्। गजास्वरथया द्वेषीरणे वा स्वगृहे स्थिता ॥ २३॥ भद्रं भवेति नैवेद्यं दापयेत्सलकं वय
 म्। निग्रहं कुरुते शत्रोन्नायथा योगिनीमते ॥ २४॥ द्विहस्तस्तु समभूम्यां पांडुका मालिनी निशि। आचार्य प्राप्नुयो भूत्या योगिनी यंत्रमुद्धरेत् ॥ २५॥ तीर्थं गृहं गतौ रवा कला
 संध्या समाचरेत्। तिथिभीज्यातिहकाष्टा भवत्यात्र न संशयः ॥ २६॥ दिग्दिहं च वर्गं च वाहस्तदा महर्हिणे। नामौ नवपदं लेखे तीर्थं चोर्द्धगा क्रमात् ॥ २७॥ नंदनं दपदं कृत्वा डा

षट्द्विंशत्युपकोष्टका । तत्र कोष्टे लिखेन्नामयश्चिदधिकं सतम् ॥ २ ॥ पीठनाथं च देव्या च क्षेत्रेशादिदिशा पदुः । भैरवा शक्तिद्विती च चेतं पंक्तिपदक्रमात् ॥ २५ ॥ तथा ते दि-
ग्गजा चाष्टौ मध्ये त्रिपुरमैरिव । अन्तरालतुये कोष्टा मध्यादिपरिधौ क्रमात् ॥ ३० ॥ चतुःषोडशकमं लिख्यो देव्या मध्यकोष्टके । वाह्ये चक्रचतुर्लिख्यतो यकुंभं च ईशादिग्ग ॥ २२ ॥
पंचरत्नसमायुक्तं पक्षवैमुखप्ररितं । अतवस्योपरिष्ठाद्यप्रभाते विमले जेले ॥ २२ ॥ मातंगस्य यथा यो धारा जपुत्राभिषेचयत् । वद्यशस्त्राभिषेकं च कर्त्तव्यं जयकोटिभिः ॥ २३ ॥
इति यामले रणयात्रायां बलि विधाने महाप्रज्ञा समाप्तः ॥ ॥ अथौषधः ॥ ॥ दौंडी चंडी त्रिशूली च मुकुरी वज्रिणी कृत्वा । देहस्था समरेपुंसां सर्वा युधानि वारणाम् ॥ २० ॥ अंजनै-
कं च नालय चंपकोत्पन्नकः कुहः । लेपनं विजयी युद्धे वज्रदेहो भवेन्नरः ॥ ३१ ॥ खड्गं त्रीमखमध्वस्तु कटिवद्वा वक्रगकीधुः । ऊर्ध्वं उच्छिन्नास्तुल्यं सर्वार्थनिवमधम् ॥ ४ ॥ दक्षवक्रं हि
तश्चर्कं वामं दूययध्वया नुदण्डगतो युद्धे वज्रदेहो भवेन्नरः ॥ ५ ॥ त्रिलोहयेष्टितं कृत्वा रसं वज्राभ संयुतं । वक्रस्थं च कनस्थं च सर्वा युधानि वारणाम् ॥ ६ ॥ गौं नकाणीं समीपुंजा
अतवणीं समाहरेत् । चन्दनेनान्विता सर्वास्तिलकेन जयोरणो ॥ ७ ॥ अश्वपुष्पी शिषाश्चैव स्वता च गिरिकर्णिका गौरो च नासमायुक्तं तिलकं शत्रुमोहनं ॥ ८ ॥ कनकात्कं व
दो वीह । षट्पदः पंचमस्तथा । करोति तिलकं यस्तु पश्येत्तं पंचधारिणः ॥ ९ ॥ कृत्वा सर्पकपालं तु वशामृत्तिकया न्वितम् । शितगुंजावपेत्तत्र तस्य मूलं समाहरेत् ॥ १० ॥ कृ-
ततिलकं भट्टं दृष्ट्वा पश्येत्तस्य हतं रिपुम् । स्वगणैर्भक्तमाणां तु पतंतं च ततो भुवि ॥ ११ ॥ द्वायाय स्य जले त्र्योति संग्राह्यः का समर्द्धकाः । अनेन तिलकेनोरी रूपवत्तं पश्यति
॥ १२ ॥ इति तिलकम् ॥ ॥ वस्त्रदंडी च कोमारिडस्वरी वैष्णवी स्तथा । वाराही वज्रिणी च डीमहालक्ष्मी जटाभिधाः ॥ १३ ॥ पताशैषा धयोदिव्या तत्रैनामतरस्मता ॥ कृत्वा
भट्टकरे वक्षःसर्वसखनिवारणं ॥ १४ ॥ वंगं शीशकशुक्राध्रहेमतारसमीन्वतेऽह । वज्राय सादिभियुक्तः कृत्यतेण रदोरसः ॥ १५ ॥ वज्राणां डाबाणां वक्षःपारदस्य च वंदनं । लघुडावंतथाः
लोहं संयोगार्थं परस्वरं ॥ १६ ॥ अस्थि संवलमध्वस्तु कृत्वा वज्रनिश्चतम् ॥ १७ ॥ वंगिकारसंघं नष्टपिष्टं तु पारदं । ढिक्का कंदस्य मध्यस्थं वधनार्थं ततस्फुटं ॥ १८ ॥ रेती तं द्वाह
चूर्णीतु टंकनेन तु भावये ॥ १९ ॥ लघुडाविभवे द्येयं नाममात्रेण संसय ॥ २० ॥ सर्वस्यानेकतः कृत्वा मूलमध्वस्थिताक्षिपेत् । गुटिका जायते रंम्या नाग्रा वज्रांगशुंदरीः ॥ २० ॥
मुखस्था सिद्धिदा प्रोक्ता जरमृत्पुनिवारणं । संग्रामे विजयी विरो वज्रदेहो महाबलः ॥ २१ ॥ सर्वलोकपयोनिहं नारी नोऽभुभगस्तथा । गुटिकेयं महाघाता प्रोक्ता ये वक्ष्यामले ॥ २१ ॥

इति वज्रगुणिका ॥ ॥ सिंहो व्याधौ मृगो हंसी चतुर्थे वंके पर्दिका । एता शालक्षिणो वक्ष्ये प्रभागे च यथा गमम् ॥ २३ ॥ सिंहो शुबर्णा वर्णा च व्याधौ धूम्रा सरिषिका । मृगी त
 त्रविनीयात्पीतप्रियासितोदरी ॥ २४ ॥ हंसी जलतरा खोता वदनोता चोर्दिक्का । एवं तस्मिन्क्षणे जात्या ततः कर्म समारभेत ॥ २५ ॥ अधो सिंहो ना म तया घृष्टो महा
 रसः । सिंहो कपर्दि कामधो कपे तन्मूल संयुतम् ॥ २६ ॥ विधाय वदनं यस्या शुक्लकेश समंततः । उ स्यो वक्रस्थिता यातु सिंहवज्जीयेते नरः ॥ २७ ॥ मदोन्मत्तगजास्तस्य
 दर्शने नापराध्नुत्वाः । रणे राजकुलाद्येते विवादे चापराजितः ॥ २८ ॥ व्याधौ रसेन संध्यष्टः पारदो मूल संयुतः । पूर्ववत्साधयद्याधौ फलं चैव तथा विधे ॥ २९ ॥ मृगम्
 त्रेण संभिन्ना मृत्तिका रस संयुतः । मृगध्वस्त्यो ह्निपे न्मस्युत स्या फलमिदं शृणु ॥ ३० ॥ मुखमधो स्थिता यातु वसी भवति धीयता । रीतकाले मुखस्थायो बाला प्राणा हरो न
 रः ॥ ३१ ॥ हंसा पौर्दी रसे श्रेष्ठः पारदो मूल संयुतः । हंसी मधो कपे धीमां मुखस्थ्या सर्वा सिद्धिदाः ॥ ३२ ॥ ग्रहणो जन्तु कुर्वति दुष्टा न्मष्टस्तथैव च । स्या वरं जंगमं
 चैव विषे न स्यति तद्दृष्ट्वा ॥ ३३ ॥ इति कपर्दिका ॥ ॥ क्रितिका च विशाखा च भौमवारेण संयुतः । तद्दिनं घटितं शस्त्रा संग्रामे जयदा सैम्यकं ॥ ३४ ॥ योगघटि
 तशस्त्राणि ॥ ॥ उपा मार्ग रसेनैव याति शस्त्रा निलेपयेत् । जायते तमि संग्रामे वज्रसारोण निश्चितं ॥ ३५ ॥ इति सखरका ॥ ॥ विद्युत्पात मृगा स्थितिपेष
 पकरकां वुनौ । उनेन विलिखता हं संनो हे फलके पिवा ॥ ३६ ॥ तत्र लग्ना निशस्त्राणि नुटंति च न वीति च । न भिन्दन्ति सारिणी पुष्पा नि च यथा विदुः ॥ ३७ ॥
 इति सखमोटनं ॥ ॥ कृत्स्न सर्पसिरानेष्टो वषपं च पलाति च । कुकुंदरी वशाद्यौ च तथा च गृह गोधिका ॥ ३८ ॥ कृत्स्नस्य सश्वक स्याद्यौ कपिकुपलाष्टकं । द्यौपलौ
 हरितालस्य कृत्स्न कलासः वसापलं ॥ ३९ ॥ रक्तकंचुकया नारिरक्तप्रवरणां वुजा । नटदारसमायुक्ता पर्वतानि पिमान् रत्न ॥ ४० ॥ गृहीते मखले पुं द्वे षड्विंशः चतुषष्टि
 का । गननाद्यौ तरेता वा शतेनै च पुनः स्तथा ॥ ४१ ॥ मयूरो लूकपि क्वा यो पि द्वे तन्मानं ग्रंथिकं । ग्रहेण भुक्ती पर्यंतं रक्तशूत्रेण बंधनं ॥ ४२ ॥ इष्टं मे त्राभियसे न तरे
 नारी विनासनं । विसर्गमुदयात्तेन गच्छ गच्छ पराधुवम् ॥ ४३ ॥ सर्पो ष्टा स्थान रोधी नाः स्वशेन्य विजया बहा ॥ ४४ ॥ इति पिष्टकविधिः ॥ ॥ लांगली वृहस्पदो व
 ह्मस्तेना मत्तरसानि च । मार्ज पत्रां वकं चर्म पश्चाद्यंत्रं समालिखेत् ॥ ४५ ॥ काकरत्नं तथा विष्टा चित्तां गारहला हलोः । काकपिष्टस्य लेखन्या लिखेद्यंत्रयमार्गं

लं ॥४५॥ मध्ये वीजस्य मध्ये स्थे शत्रुनामं ससैन्यकं । वाद्यस्तु वायुवीजेन वा कुलीधृतमानसः ॥ वेष्टश्चित्रगुणं पुनः ॥४६॥ वायुमंडलं कृत्वा वायुवीजेन रंजिका । द्वा
दशस्वरसंयुक्ता वेष्टश्च सवामार्गतः ॥४७॥ अंबकस्थस्य नादेन वा कुलीधृतमानसस्य वलयुक्ता महावीरापलोयं तैरणांगणो ॥४८॥ अंबकविधिः ॥ ॥ हेमायस्त्रपु
रोष्णा नां समभागैस्ततः फलं । द्वादशयेन ताम्रैर्नकारैश्च यकलम ॥४९॥ काहलीरसमल्लिखादश्च ताराणांगणो । अर्धत्वा नादप्रणयान्ति आनिष्टा अपिशत्रवः ॥५०॥ न
यकाहलविधिः ॥ ॥ तां प्रवस्थ विधानं तु दक्षायामप्येकारश्च । तथैव फलमप्युक्तं समनांगणभूमिषु ॥५१॥ डक्का ॥ ॥ तुं विनीची चित्रां देडी कृत्वा न्मत्तरसान्विता । मार्ज
एन्मुखं भांडे सप्तवारान्युद्वयम् ॥५२॥ देडी सा चित्रका दत्तौ लज्जालूरसंयुता । कुरं विमर्दश्चेत्तेन ययवाद्यं च मात्रनं ॥५३॥ मुरजभाजनीविधिः ॥ ॥ अग्निहोत्रस्मसानां च जाति
गेहसमुद्भवम् । भस्मत्रितयमादाय कर्तव्यं भस्मकुट्टनं ॥५४॥ इन्द्रकर्मण्यं कार्यं मुखलं मूशलं दृढं । चतुरश्रं समाने च द्वारहोने च मंडले ॥५५॥ स्थापयेद्दृषले तत्र कुर्युस्तद्भस्मकु
नां चतुर्वर्गो द्विवाकन्या चतुःषष्टिप्रमानतः ॥५६॥ चतुर्विंशतिशंखाश्च नाम गीतेन संयुतं । तं रासं प्रवक्ष्यामि सर्वमंत्रमयं सुभम् ॥५७॥ कालडकु कुडुमुटु मुंडयत रुसुति उवहाणु २८
लक्ष्मीकरं तडकि आई राहम हौ यो शुलग्न इति ॥ ॥ एतद्भस्म कृत्वा तं रेषालंघयंति नैवैरिणः । क्षिप्यते च त्रयोसैन्यैर्भस्मयायाति तत्क्षणात् ॥५८॥ इति भस्मसाधनम् ॥ ॥
मारणो मोहरोक्तं मे विद्वेषोच्चाटनं वसे ॥ एकं यमार्गलं यंत्रं भेदेन बहुधा स्थितं ॥५९॥ द्वादशारं लिखेच्चक्रं चित्रं त्रयविभूषितम् । ऊर्ध्वीमंत्रं तु तद्वाद्येयमशोकं च मधुतः
॥६०॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं विष्णुतदङ्गाने हं फडा इममुष्ठी नुदश सहस्रानि संजयेत् । एतमधुनारक्तपुष्पैश्च शहस्रपुष्पैस्तु होमश्च । ततः सिद्धो भवति ॥ ॥ यमराजसदोम
ययसे दोराण्योदयः । यदयो निरयहेयययै यच्च निरामयः ॥६१॥ इति यमश्लोकम् ॥ ॥ हनुमन्तं कालरात्रिं महा मां त्रिखगाधिपं । लेषयेद्देवपालं च फणिं च गणनायकं
॥६२॥ पताकायां लिखेत्तदष्टकं पूर्वशुचितं । ततः सारतरं स्यात्वा प्रयोगे विस्तारद्वयेत् ॥६३॥ आरंभ्य फलहेमूलं गृहीतं च शुभे दिने । कन्याकर्तेश्च त्रेणादिने वञ्चि
निर्दिशेत् ॥६४॥ युद्धे काले पटं चैव गजास्वपरि संस्थितं । दर्शितं शत्रुसैन्ये भंगमायाति निश्चितं ॥६५॥ इति पताकाविधिः ॥ ॥ मदनेन हनुं कृत्वा पूर्वलागूल
वैष्टितं । तंतुवक्त्रानयत्तत्र तत्र तत्साधयश्चन ॥६६॥ परचक्रस्य यमुखा लागूलाकारयद्वहि ॥ गजास्वरयज्ञानातिवाहस्थानं तु कार्पण ॥६७॥ पूर्वमंत्राह

[illegible]

डायदाहवतिकेदुगहा आत्मवंधूकलस्य कर्मधनुतथागुरुम॥१०॥षष्ठाष्टासुगतासोम्यायापाकन्दुशिविरुगहावन्दास्ययलतत्प्राप्तमन्त्रवदुःखरता॥१८
 ॥वनवर्धनकवन्दयागहवतिनिधितं।स्तिवष्वहवनेवद्विस्तलावविलविता॥१२॥नवागकाकमरेवद्व्यामूकनगाग्रहातिग्वदोद्वनविद्वनरुवधनिनीद
 यत॥२०॥नानिदकाधधिष्ठांयस्ययस्याद्वनस्ति॥१४॥तस्यतस्यरुलंवक्ष्ये।गिनात्ररुवधन॥२१॥नागिताउदि।रूयानद्वगुलननिर्नय॥२३॥काधकस्तनारू
 याद्वयनामनवांगक॥२२॥ग्रहद्विस्वसद्वधसंयोरुकिप्रमादत॥मूकनाकालनिद्व।नमनरूयवंधत॥२३॥जीवरूगिहिकीवंधाउयाताकिरुसुतो।मूलमा
 दित्युकाणामि।मिगुविनिदि।त॥२३॥००तिद्वष्टाग्रहयन्दा।कायाद्वयस्यनिर्नय॥याम्यायाम्यकुमाद्वयाधुयाताकिरुसुतो॥२४॥मूलमादित्यसुकायांसु
 कासुसंकमधवा।मि।मिगुवद्वयंतेकालन्दा।निनीद्वयता॥२४॥द्विपदंसु।कुलामधकंरुवाययदामितावद्वदिमीनककादो।गधेयन्दावद्वयदो॥२५॥वद्वि
 द्विपदोरूयाद्ववानुपकिनाकस॥१५॥वमेषादिगवद्वरूयास्तिवधमजय॥२७॥वद्विपदावद्वरूयाद्वकीगुंगीनधीधूनी।मिषादिनागि।गवद्वरूयास्तिवधमजय॥२८
 ॥अयदानकपाद्वयद्वि।सुलजलाहवा॥१६॥तवनागिस्वरावनरूतव॥१७॥३०॥रुमतानंतथातासेवंगनांमनलाहकां।नागंकां।गंवविद्वयंनवांगककम
 धवा॥३१॥गुलमवन्नीलताकंदंमेषाद्वेकसंस्तिता।यउपेयंरुलंमूलं।ववोरे।गंसकव॥३२॥यद्विविषादिकानरू।अमूजास्तिवधमजय॥३३॥वद्विपदावद्वरूयाद्वकीगुंगीनधीधूनी।मिषादिनागि।गवद्वरूयास्तिवधमजय॥३४
 विद्विगवद्वयुषाथवा॥३३॥सूर्यादिवस्म।गवद्वेकसंस्तिता।यउपेयंरुलंमूलं।ववोरे।गंसकव॥३४॥यद्विविषादिकानरू।अमूजास्तिवधमजय॥३५॥गोवाति।गोनस्यामय॥३६॥मकटसवि
 रू।वेद्विगंसकवधमानवानां।विलामरु॥३७॥ग्रहद्वरूताव।धोतववर्धपूनादिता॥३८॥रूतव्या॥३९॥सर्ववधुनीनरूवाविंतिगयिवा॥४०॥वालकंतनूधेवद्व
 डका।वधम।वद्वत॥मि।दि।कुर।गेवद्वि।सामि।क।नि।वै।जना॥४१॥उर्ध्वस्यउर्ध्वगवद्वेकसंस्तिता।यउपेयंरुलंमूलं।ववोरे।गंसकव॥४२॥यद्विविषादिकानरू।अमूजास्तिवधमजय॥४३॥गोवाति।गोनस्यामय॥४४॥मकटसवि
 ॥ना।मोद्वद्वका।वधम।वद्वत॥मि।दि।कुर।गेवद्वि।सामि।क।नि।वै।जना॥४५॥उर्ध्वस्यउर्ध्वगवद्वेकसंस्तिता।यउपेयंरुलंमूलं।ववोरे।गंसकव॥४६॥यद्विविषादिकानरू।अमूजास्तिवधमजय॥४७॥गोवाति।गोनस्यामय॥४८॥मकटसवि
 हवपमी॥४९॥यधमनवमव।धदितीयसफमरूथा।गि।गियेवमना।मोद्वका।वधम।वद्वत॥५०॥हृदयाकनवउध्वं।ववउध्वं।वधुन॥५१॥सकविं।गतिधिष्ठातां

वधायंमृज्जाकृतिः॥३२॥५ क्वाधवधवंधायंघट्टिगदधिकाक्षेत्रे॥५३॥कुवद्वद्वगतवन्दुविद्यतयोनसंरवाश्रुवधसो
 म्यवधवनरवोनविवर्जितः॥३७॥यत्संघाखवनाकुनावंदवधस्यसंस्मिता॥तत्संघातस्करासूयासहायोश्चक्रवाक्षो॥३९॥नृपुंड्रकालनृपधतस्कराधोवजाय
 त॥कुमादक्वाधतासूयाकृतमधवलप्रिकम॥३८॥पंकियुक्तालिषद्वधोसखायाश्चक्रनंगतासयाकावसंवधायंतननामानिसाधयता॥३९॥उदयासुगतद
 यवोननामंनृसातलादधमवधनस्तुनंनवंनोमयंरुवता॥३७॥वर्गसमादिहमानंमदहस्तोनिवर्तनाश्रुद्वकासंतथाकासोदिकासंयाजिनाधिकमा॥३९॥दंश
 रुपद्वमासुधुषमासोदयुगादिकावर्गद्वनगतवद्वेगर्ग्येकानुवकुमाता॥२०॥यद्वकपृच्छुकुद्वेधस्तानंनकालवंदमा॥३८॥सर्वसमाध्यातंमवस्तुदियनिय
 निहृदम्॥२१॥यनस्तानानिसर्वाधिसुखतांयातिरुतला॥कालवंदजंस्तानंमहोतिजनहृतवा॥२२॥ ॥ॐतिक्तकालिकवंदधुहाधुन्येकनलंसमाय॥ ॥
 अथवद्वधवकाधिसुहृदनिधेदस्यक॥ ॥ ॥ ॥

अथार्धकांउलिषता॥ ॥अर्धकांउंतथावद्वअनेपदेवसेस्तथा॥मासाक्षनाकालाक्षनायधूमस्त्रविनिर्दिधत॥१॥द्वादशहिरुनहामंयानियांनुनसमयहविशयं
 गधउद्विद्वानाविषमनसमृद्धता॥२॥अकचटतययसाडरुनासासिगधूमसंयुतं॥धविशिसकन्याजायता॥३॥अॐवद्व०धरुनयाअधनामद्वमाधतिला॥येवम
 तसविद्वजायेता॥३॥ॐउगउदवस्तुडरुनारुना॥मस्तुनास्तीलेकासूयायवन्नावद्वहिरुवित्॥२॥ॐउघमटधरुवहा॥अधनावद्वुलाकांआटकीववलाकायक

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अक्षकस्य च यन्त्रवांस्तानं विना सयद्दुर्लभं कृतं नादृता कृतम् ॥ १८ ॥ रुद्रा गुर्वलायुगं सरुंगना गकसवमा वंदनत्रकत्रपुष्पानिकतावेक्यनासनं ॥ १९ ॥ उत
 द्विषकड्यासि सूर्याय कानियामया कुरुक्षिपासवांसि सवांषि धियुता निवे ॥ २० ॥ गहवक्षस्त्रे वक्ष्यपुष्पमोलादिलं वज्रा श्रुचयत्रुंदनायै यमगर्भमिति त्रिंश
 दा ॥ २१ ॥ मंडलागुलिधेय शान्दपंतुनिवसयत ॥ उरुनाहिमुखं स्वरुं श्वतां वनविहसितं ॥ २२ ॥ संखदुयनिनादां श्ववदक्षनि समन्वितां कावपुत्तानवलायांगीत
 नृत्तमहासुवाना ॥ २३ ॥ सूर्यादिगुरुमंडे श्वसदूर्वा कृतयन्त्रवर्गा निनागं मूयन मंगी गृहात्मनः संस्थिता ॥ २४ ॥ पञ्चरुतात्रुत्तान्यूर्ध्वपूजा विधाने तडादक्षिर्भाका
 नजुरुत्तमस्त्राखेवनात्युति ॥ २५ ॥ एवं कृत्वा विधानेन ह किं यत्कापयत्ने तडादक्षिर्भाका पञ्चायकगृहाः सर्वेषु सर्वदा ॥ २६ ॥ एवं सर्वेषु कावपुत्तानवलायांगीत
 यवनां तदा तस्यैव पूर्वगृहीतान् ज्ञायता ॥ २७ ॥ गृहामुत्तान कूर्चं किं दुर्लभं विस्तारिष्यते मया यता गुरुमयं सर्वं तमां च गुरा गुरुम् ॥ २८ ॥ इति नवमः प्रश्नः
वर्षायां बुध्यामनीयस्त्रादये गुरुहकिं समापः मिति गुरुममु ॥ ॥

३९

गर्हं गुन्यासि ककाटपाका न कुवधयना ॥ गुरावक्ष्वहिल्लवतदा इर्गं खनिर्वसम् ॥ १ ॥ इर्गं संस्थाहिता ॥ यायायाकावकाटवाञ्जता गर्हनकुवर्गो म्यानां विनायुर्ध्वनयाय
 ता ॥ २ ॥ इर्गं गर्हं हतानां सोम्या कुवानसक्तिरिषायकावसंस्थिता ॥ सोम्या तदा इर्गं न गृह्यता ॥ ३ ॥ एवं गुन्यासि तर्गं इर्गं ॥ यायखेवना विक्वावनिहकित्या काटमा
 र्गं गुरुपदा ॥ ४ ॥ वहिपाका नग ॥ यायावक्वावात्सुरुगृहा इर्गं गुरुम्या रुदा इर्गं गुरावहा ॥ ५ ॥ वक्तदा गुरायायां गर्हपाकावनागिता ॥ इर्गं वक्ष्यपकारं
 वयं इर्गं वादियामता ॥ ६ ॥ पूर्वाकूनविधानेन यं वेदां र्गं लेनवा ॥ घंटा र्गं लयटा र्गं लय विधानेन यथादिताम् ॥ ७ ॥ सं ६६ ॥ शुभं शुद्धि ॥ सं ६७ ॥ शुभं ॥ नखकदेवदूधन ॥